

**ज्ञानमद** पुं. (तत्.) ज्ञानी होने का अहंकार, ज्ञान का घमंड, स्वयं को ज्ञानी मानकर मन में उत्पन्न अभिमान।

**ज्ञानमय** वि. (तत्.) 1. ज्ञान से भरा हुआ 2. ज्ञान रूप पुं. 1. परमात्मा, ब्रह्म 2. परम ज्ञान से परिपूर्ण व्यक्ति।

**ज्ञानमुद्रा** स्त्री. (तत्.) तंत्रानुसार पूजा की एक मुद्रा।

**ज्ञानमूढ़** वि. (तत्.) 1. केवल पुस्तकीय ज्ञान वाला 2. पठित मूर्ख 3. ज्ञानी होने पर भी अज्ञानीवत आचरण करने वाला पुं. ज्ञानी होने पर भी दुराचारी व्यक्ति।

**ज्ञानयज्ञ** पुं. (तत्.) 1. ज्ञान द्वारा ब्रह्मरूपी अग्नि में आत्मा-रूपी आहुति देने की साधना 2. ब्रह्मज्ञान। उत्तम ज्ञान के आदान-प्रदान का कार्य 3. अभेद ज्ञान।

**ज्ञान योग** पुं. (तत्.) ज्ञान के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति।

**ज्ञानलक्षण** पुं. (तत्.) न्याय में अलौकिक प्रत्यक्ष का एक भेद।

**ज्ञानवान** वि. (तत्.) 1. ज्ञानी 2. जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया है 3. समझदार, तत्त्वज्ञानी, विद्वान (स्त्री. ज्ञानवती) ।

**ज्ञानवापी** स्त्री. (तत्.) काशी स्थित एक सुप्रसिद्ध तीर्थस्थली।

**ज्ञान-विज्ञान** पुं. (तत्.) 1. विविध प्रकार का ज्ञान 2. सुव्यवस्थित रूप वाला विभिन्न प्रकार का ज्ञान।

**ज्ञानवृद्ध** वि. (तत्.) 1. ज्ञान प्राप्ति में लीन होकर श्रेष्ठ बने हैं जो 2. परम ज्ञानी, ज्ञानी श्रेष्ठ 3. अधिक जानकारी वाला, महाज्ञानी।

**ज्ञान-शास्त्र** पुं. (तत्.) भविष्य कथन का विज्ञान, भाग्यलेख को बताने की विद्या।

**ज्ञानांजन** पुं. (तत्.) 1. तत्त्व ज्ञान, तत्त्वदृष्टि, ब्रह्म भाव देखने की शक्ति 2. ज्ञान रूपी सुरमा।

**ज्ञानाकार** पुं. (तत्.) 1. बुद्ध 2. महान ज्ञानी 3. ज्ञान का भंडार।

**ज्ञानापोह** पुं. (तत्.) विस्मरण, भूल जाना।

**ज्ञानावरण** पुं. (तत्.) ज्ञान का परदा, ज्ञान का बाधक।

**ज्ञानाश्रयी शाखा** स्त्री. (तत्.) ज्ञान द्वारा भगवान को प्राप्त करने की भक्ति परंपरा।

**ज्ञानासन** पुं. (तत्.) योग का एक आसन जिसमें दाहिनी जंघा पर बाएँ पैर के तलवे को रखा जाता है।

**ज्ञानी** पुं. (तत्.) ज्ञानवान, ज्ञानकार, आत्मज्ञानी, तत्त्वज्ञ, ब्रह्मज्ञानी।

**ज्ञानेंद्रिय** स्त्री. (तत्.) 1. मन को बाहरी पदार्थों का ज्ञान कराने वाली पाँच इंद्रियाँ 2. ज्ञान की साधन इंद्रियाँ कान, त्वचा, आँखें, जिह्वा तथा नासिका। इसके विषय हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध।

**ज्ञानोदय** पुं. (तत्.) ज्ञान का उदय, ज्ञानोन्मेष।

**ज्ञाप** पुं. (तत्.) दे. ज्ञापन।

**ज्ञापक** वि. (तत्.) जताने वाला, सूचक, व्यंजक।

**ज्ञापन** पुं. (तत्.) जताने या बताने का कार्य।

**ज्ञापयिता** वि. (तत्.) सूचक, ज्ञापक, बताने वाला।

**ज्ञापित** वि. (तत्.) 1. जाना हुआ 2. प्रशंसित, 3. तेज किया हुआ 4. सूचित, बताया हुआ, प्रकाशित, जिसका ज्ञान या जानकारी दे दी गई हो

**ज्ञाप्य** पुं. (तत्.) सूचित करने योग्य, ज्ञान कराने योग्य, ज्ञापित करने के योग्य।

**ज्ञीप्सा** स्त्री. (तत्.) जानने की इच्छा।

**ज्ञेय** वि. (तत्.) जो जाना जाने योग्य हो, जानने योग्य।

**ज्या** स्त्री. (तत्.) 1. धनुष की डोरी (प्रत्यंचा) 2. वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो 3. पृथ्वी 4. माता 5. किसी वृत्त का व्यास, एक त्रिकोणमितीय फलन जो एक समकोण त्रिभुज में लंब और कर्ण का अनुमान होता है।

**ज्याघोष** पुं. (तत्.) धनुष की टंकार।

**ज्यादती** स्त्री. (फा.) 1. बहुतायत, अतिरेक, अधिकता 2. जबरदस्ती 3. अत्याचार, जुल्म।

**ज्यानि** स्त्री. (तत्.) 1. जरा, वृद्धावस्था, बुढ़ापा 2. त्याग, परित्याग 3. अत्याचार 4. उत्पीड़न 5. हानि।